भारतीय आईटी कारोबार पर लगी चोट

यह अप्रत्याशित नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच1-बी वीजा समीक्षा आदेश पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। 'अमेरिकिन फर्स्ट' उनके चुनावी अभियान का अहम मुद्दा था। बल्कि उन्होंने एच1-बी वीजा को खत्म करने का वायदा किया था। एच1-बी वीजा भारतीय आईटी उद्योग व प्रतिभाओं के लिये वरदान साबित हुआ। उन युवा प्रोफेशनल्स के लिये भी, जिनके जीवन का सपना अमेरिका हुआ करता था। हर साल करीब पैंसठ हजार एच1-बी वीजा मिलते थे, जिसमें भारतीय प्रशिक्षित कामगारों का बड़ा हिस्सा होता है। अमेरिकी राजनेता व अधिकारी इसके दुरुपयोग का आरोप लगाते रहे हैं। उनका आरोप है कि आईटी कंपनियां निचले स्तर के कामगारों को वीजा दिलाकर मुनाफा कमाती हैं। यह सच है कि देश की चोटी की आईटी कंपनियां साठ फीसदी से अधिक मुनाफा अमेरिका से कमा रही हैं। यह भी सच है कि अमेरिका का 65 फीसदी आईटी कारोबार भारतीय कंपनियों पर निर्भर है। अमेरिका का आरोप है कि भारतीय कंपनियां सस्ते प्रोफेशनल लाकर अमेरिकी लोगों से रोजगार छीन रही हैं। वहीं आस्ट्रेलिया ने वीजा प्रोग्राम (457 वीजा) को यह कहकर रद्द कर दिया है कि अब स्किल्ड जॉब्स में 'आस्ट्रेलिया फर्स्ट' की नीति चलेगी। इससे भारतीयों को खामियाजा उठाना पड़ेगा। कमोबेश यह लहर पूरे यूरोप में है। ब्रिटेन की यूरोपीय संघ से अलग होने की भी यही कहानी है। यह वैश्वीकरण की सोच की पराजय भी है। जब तक बहुराष्ट्रीय कंपनियों के जरिये इन देशों को मुनाफा होता रहा, तब तक वे ग्लोबलाइजेशन का राग अलापते रहे। अब जब उन्हें लगा कि चीन व भारत जैसे देश फायदे में जा रहे हैं तो फिर असली सोच दर्शाने लगे।

कहते हैं कि ईमानदार कभी नहीं हारते?

कहते तो ऐसा ही हैं कि ईमानदार कभी हारते नहीं। लेकिन वो 'हार' गए। ईमानदार होने के साथ आम आदमी होते-होते हार गए। इतना विकट हारे कि जमानत तक जब्त हो गई। दिल के अरमां इस तरह से आंसुओं में बह निकलेंगे, उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। यहां तक कि ईवीएम से नहीं, बैलेट से चुनाव करवाने का फंडा भी काम न आया। हार की हड्डी गले में ऐसी जा फंसी कि न निकालते बन पा रहा है, न उगलते। तो क्या मान लें, ईमानदारी के साथ-साथ आम आदमी की प्रासंगिकता के दिन हवा हुए? प्रासंगिकता के साथ भी कई टाइप के लोचे हैं। अक्सर वे लोग भी प्रासंगिक बने रहने पर अड़ जाते हैं, जिनका दिन विरोध से शुरू होकर रात भी उसी पर खत्म होता है। इतना विरोध, इतना विरोध किया करते हैं कि बेचारे विरोध को भी खुद पर 'शर्म' आने लगती है। चूंकि वो ईमानदार हैं, इसीलिए विरोध और प्रासंगिकता पर केवल अपना ही हक समझते-मानते हैं। शुरू में जब मैंने उनकी ईमानदारी को समूचे मीडिया के बीच 'ग्लोरिफाइड' होते देखा था, कसम से, मेरा दिल भी उन्हीं की तरह ईमानदार होने को मचला जाया करता था। उनकी ईमानदारियों को और करीब से जानने-समझने की इच्छा होती थी। रात-दिन सिर्फ और सिर्फ ईमानदार महापुरुषों को पढ़ने-गुनने लग गया था। एक दफा तो पत्नी ने शंका भी व्यक्त कर दी थी-तुम ईमानदार होते-होते कहीं महात्मा बुद्ध न बन बैठना। लेकिन ईमानदार बने रहने की हवा ज्यादा दिन तक बरकरार रह न सकी। जैसे धीरे-धीरे उनकी ईमानदारी के परखच्चे उड़ने लगे, वैसे-वैसे मैंने भी अपने ऊपर से ईमानदारी के कंबल को उतार फेंका। फिर तो उनकी कथित ईमानदारी पर हार के ऐसे बुलडोजर चले कि मियां चारों खाने चित। पंद्रह हजार की थाली ने आग में घी ऐसा छिड़का कि ईमानदारी और आम होने की नौटंकी धरी की धरी रह गई। ईमानदारी कुछ नहीं बस खुद को 'बर÷लाते' रहने का 'शिगूफा' है। आदमी अगर इतना ही ईमानदार हो जाए न, फिर तो उसकी गाड़ी समाज में भी चल ली और राजनीति में भी। साम-दाम-दंड-भेद का नाम ही राजनीति है। राजनीति अच्छे-अच्छे ईमानदारों के ईमान को पलट कर रख देती है, फिर उनकी तो बिसात ही क्या। जनता ने उनकी ईमानदारी पर झाड़ू के साथ ऐसी चाबुक चलाई कि न घर के रहे, न दफ्तर के। मैंने तो यह बात गांठ बांध ली है कि कुछ भी बन जाऊंगा मगर ईमानदार का ढोंग न करूंगा। ओढ़ी हुई ईमानदारी की मार बड़ी विकट होती है, यह उनकी हालत देखकर साफ लग रहा है। जो हो, जैसे हो में ही 'असली सुख' है।

बिजली की फिजूलखर्ची का खेल

देश के अधिकांश राज्यों में चौबीसों घंटे बिजली की सप्लाई एक बड़ा मुद्दा है। भले ही हम बिजली उत्पादन के आंकड़ों में आत्मनिर्भर व मांग के हिसाब से आपूर्ति करने वाले देश बन गए हों, लेकिन देश की राजधानी दिल्ली में भी कई इलाके कम वोल्टेज या अपर्याप्त बिजली संकट से जूझ रहे हैं। ऐसे में 52 दिनों तक दूधिया रोशनी से स्टेडियम को चमका कर इंडियन प्रीमियम लीग का तमाशा खड़ा करना समझ के परे है। कहना मुश्किल है कि असल में आईपीएल खेल है या मनोरंजन। यह तथ्य अभी दबा-छुपा है कि आईपीएल के नाम पर इतनी बिजली स्टेडियमों में फूंकी जा रही है, जितने से कई गांवों को सालभर रोशनी दी जा सकती है।

यहां यह जानना भी जरूरी है कि बिजली के बेजा इस्तेमाल से हमारा कार्बन फुट प्रिंट अनुपात बढ़ रहा है। यह तो सभी जानते हैं कि वायुमंडल में सभी गैसों की मात्रा तय है और 750 अरब टन कार्बन, कार्बन डायआक्साइड के रूप में वातावरण में मौजूद है। कार्बन की मात्रा बढ़ने का दुष्परिणाम है कि जलवायु परिवर्तन व धरती के गर्म होने जैसे प्रकृतिनाशक बदलाव हम झेल रहे हैं। कार्बन की मात्रा में इजाफे से दुनिया पर तूफान, कीटों के प्रकोप, सुनामी या ज्वालामुखी जैसे खतरे मंडरा रहे हैं। दुनिया पर तेजाबी बारिश की संभावना बढ़ने का कारक भी है कार्बन की बेलगाम मात्रा। जब देश का बड़ा हिस्सा खेतों में सिंचाई या घरों में रोशनी के लिए बिजली आने का इंतजार कर रहा होगा, तब देश के किसी महानगर में हजारों लोग ऊंचे खंभों पर लगी हजारों फ्लड-लाइटों में मैच का लुत्फ उठा रहे होंगे।

आईपीएल के दौरान भारत के विभिन्न शहरों में 05 अप्रैल से 21 मई के बीच कुल 60 मैच हो रहे हैं, जिनमें से 48 तो रात आठ बजे से ही हैं। बाकी मैच भी दिन में चार बजे से शुरू होंगे यानी इनके लिए भी स्टेडियम में बिजली से उजाला करना ही होगा। रात के क्रिकेट मैचों के दौरान आमतौर पर स्टेडियम के चारों कोनों पर एक-एक प्रकाशयुक्त टावर होता है। हरेक टावर में 140 मेटल हेलाइड बल्ब लगे होते हैं। इस एक बल्ब की बिजली खपत क्षमता 180 वाट होती है। यानी एक टावर पर 2,52000 वाट या 252 किलोवाट बिजली फुकती है। इस हिसाब से समूचे मैदान को जगमगाने के लिए चारों टावरों पर 1008 किलोवाट बिजली की आवश्यकता होती है। रात्रिकालीन मैच के दौरान कम से कम छह घंटे तक चारों टावर की सभी लाइटें जलती ही हैं। अर्थात एक मैच के लिए 6048 किलोवाट प्रति घंटा की दर से बिजली की जरूरत होती है। इसके अलावा एक मैच के लिए दो दिन कुछ घंटे अभ्यास भी किया जाता है। इसमें भी 4000 किलोवाट प्रति घंटा (केवीएच) बिजली लगती है। अर्थात एक मैच के आयोजन में दस हजार केवीएच बिजली इसके अतिरिक्त है।

दूसरी तरफ एक गांव का घर जहां दो लाइटें, दो पंखे, एक टीवी और अन्य उपकरण हैं, में दैनिक बिजली खपत दशमलव पांच केवीएच है। एक मैच के आयोजन में खर्च 10 हजार केवीएच बिजली को यदि इसे घर की जरूरत पर खर्च किया जाए तो वह बीस हजार दिन यानी 54 वर्ष से अधिक चलेगी।

जाहिर है यदि एक क्रिकेट मैच दिन की रोशनी में खेल लिया जाए तो उससे बची बिजली से एक गांव में 200 दिन तक निर्बाध बिजली सप्लाई की जा सकती है। ये सभी मैच दिन में होते तो कई गांवों को गर्मी के तीन महीने बिजली की किश्त से निजात मिल सकती थी।

हमारे देश के कुल 5,79,00 आबाद गांवों में से 82,800 गांवों तक बिजली की लाइन न पहुंचने की बात स्वयं सरकारी रिकार्ड कबूल करता हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में कुल उत्पादित बिजली का मात्र 35 फीसदी का ही वास्तविक उपभोग हो पाता है। हर साल खेतों को बिजली की बाधित आपूर्ति के कारण हजारों एकड़ फसल नष्ट होने के किस्से सुनाई देते हैं।

जनता की मूलभूत जरूरतों में जबरिया कटौती कर कतिपय लोगों के ऐशो-आराम के लिए रात में क्रिकेट मैच आयोजित करना कुछ यूरोपीय देशों की नकल से अधिक कुछ नहीं है। लेकिन भारत में जहां एक तरफ बिजली की त्राहि-त्राहि मची है, वहीं सूर्य देवता यहां भरपूर मेहरबान है। फिर भी रात्रि मैच की अंधी नकल क्यों? एक मैच के दौरान व्यय बिजली, पानी, वहां बजने वाले संगीत के शोर, वहां पहुंचने वाले लोगों के आवागमन और उससे उपजे सड़क जाम से हो रहे प्रदूषण से प्राकृतिक संसाधनों का नुकसान तो हो ही रहा है, साथ ही यह सब गतिविधियां कार्बन का उत्सर्जन बढ़ाती हैं। अभी हम 'अर्थ अवर' मना कर एक घंटे बिजली उपकरण बंद कर इसी कार्बन उत्सर्जन को कम करने का स्वांग करेंगे।

हकीकत तो यह है कि पूरा देश जितना कार्बन उत्सर्जन एक 'अर्थ अवर' में कम करेगा, उतना तो दो-तीन आईपीएल मैच में ही हिसाब बराबर हो जाएगा।

पटरी से उतरती प्रभु की रेल

देश में रेल हादसे अब आये दिन की बात हो गई है। बीती 15 अप्रैल को मेरठ से लखनऊ जाने वाली राज्यरानी एक्सप्रेस रामपुर पहुंचने से पांच किलोमीटर पहले ही बेपटरी हो गई। यात्रियों के अनुसार जैसे ही कोसी नदी के पुल से गाड़ी गुजरी तभी अचानक झटके लगे और डिब्बे पटरी से उतर गये। सैकड़ों यात्रियों को चोटें आयीं। रेलमंत्री सुरेश प्रभु ने दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच के आदेश दे दिए हैं। साथ ही रेल अधिकारियों पर लापरवाही बरतने का मुकदमा भी दर्ज किया गया है। राज्यरानी एक्सप्रेस के दुर्घटनाग्रस्त होने की वजह क्या रही, इसका पता तो जांच के बाद ही चल पायेगा लेकिन कहीं यह हादसा आतंकी साजिश तो नहीं है? वैसे घटनास्थल पर डाउन लाइन का एक टुकड़ा अलग मिला है। इससे लग रहा है कि यह हादसा भी रूरा और पुखरायां की तरह पटरी टूटने से हुआ। आशका है कि रामपुर रेलवे स्टेशन व सीआरपीएफ का सेन्टर आतंकियों के निशाने पर हैं। आईबी इस मामले में कई बार आतंकी अलर्ट भी जारी कर चुका है। सीआरपीएफ सेन्टर पर 2007 में आतंकी हमला हो ही चुका है। कानपुर का रेल हादसा इस बात का सबूत है कि वहां आतंकियों ने रेल पटरियां काटकर वारदात को अंजाम दिया था। चंदौसी में भी इसी तरह का प्रयास किया गया था। वैसे कानपुर हादसे के पकड़े गए संदिग्धों की मानें तो उत्तर प्रदेश में आईएसआई के सदस्य सक्रिय हैं। देखा जाये तो ब्रजघाट पर रेल के पटरी से उतरने के बाद से कई हादसे हो चुके हैं। कई जगहों पर क्लिप निकली हुई पायी गई। अगर एक साथ कई जगहों पर क्लिप टूटती है तो कोई भी बड़ा हादसा हो सकता है। अन्यथा रूटीन चैकअप में 24 घंटे के अदर पंडलम क्लिप ठाक कर दी जाती है। देखा जाये तो बीते 13 सालों में हुए रेल हादसों में तकरीबन 85 फीसदी रेल हादसे तो केवल रेल के पटरी से उतरने के कारण हुए हैं। इसका प्रमुख कारण पटरियों के रखरखाव में लापरवाही का बरता जाना है। उत्तर प्रदेश में बीते दिनों महोबा में हुए रेल हादसे में ट्रैक निगरानी, रखरखाव और मरम्मत की पोल खुल ही चुकी है। यह बात सामने आयी कि रेल मैन्युअल का ठीक तरह से पालन नहीं किया जा रहा है। जबकि हकीकत में गर्मी और सर्दी में ट्रैक में नये फ्रैक्चर, वेल्ड फ्रैक्चर होने की संभावनाएं बहुत ज्यादा मात्रा में बढ़ जाती हैं। देश में हर साल औसतन 5000-6000 से भी ज्यादा रेल फ्रैक्चर व वेल्ड फ्रैक्चर होते हैं। इसमें सबसे ज्यादा 1100-1200 रेल फ्रैक्चर उत्तर रेलवे में होते हैं। हाल के सालों में रेल हादसों में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है। इसके पीछे यातायात में बेइंतहा बढ़ोतरी, बुनियादी ढांचे में निवेश की कमी और रेलखंडों पर पड़ने वाला अतिरिक्त बोझ प्रमुख कारण हैं। असल में भारतीय रेलवे के कुल 1,219 रेलखंडों में से 40 फीसदी से ज्यादा पर ट्रेनों का जरूरत से ज्यादा बोझ है। कुल 66 फीसदी पर कुल लाइन क्षमता से 150 फीसदी से ज्यादा यातायात हो रहा है जबकि 90 फीसदी से ज्यादा यातायात तकनीकी रूप से उचित नहीं माना जाता। 15 अगस्त 2010 को कैग ने अपनी रिपोर्ट में ओवरलोडेड मालगाड़ियों के परिचालन पर आपत्ति जाहिर की थी। उसने ओवरलोडेड मालगाड़ियों पर प्रतिबंध लगाने का सुझाव दिया था लेकिन कमाई के चक्कर में रेलवे बोर्ड कैग की अनुशंसा की लगातार अनदेखी कर रहा है। उच्च घनत्व वाले रेलखंडों की बदहाली तो जगजाहिर है।

माल्या पर शिकंजा

हालांकि मंजिल अभी दूर है, पर भगोड़े शराब कारोबारी विजय माल्या की लंदन में गिरफ्तारी को एक सकारात्मक संकेत तो माना ही जा सकता है। बेशक माल्या को तीन घंटे में ही जमानत भी मिल गयी, लेकिन उन्हें यह संदेश भी मिल ही गया होगा कि कानून के हाथ लंबे होते हैं। आईडीबीआई समेत कई भारतीय बैंकों से लिया कर्ज न लौटाने वाले रंगीन तबीयत के कारोबारी माल्या पिछले साल मार्च में भारत से भाग गये थे। निश्चय ही करोड़ों रुपये के डिफाल्टर कर्जदार के इस तरह देश से चले जाने पर संबंधित बैंकों, सरकारी विभागों पर भी सवाल उठना स्वाभाविक है, लेकिन अगर माल्या को लंदन में गिरफ्तार किया जा सका तो यह भारत सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है। बेशक तीन घंटे में ही मिल गयी जमानत बताती है कि ब्रिटेन के कानून के तहत माल्या के विरुद्ध कार्रवाई आसान नहीं है। भारत प्रत्यर्पण तो और भी मुश्किल है। यह भी एक कारण है कि माल्या ने ब्रिटेन जाने का ही विकल्प चुना और भारतीय अदालतों द्वारा जारी समनों को अनदेखा करता रहा, जिसकी परिणति अंततः उसे भगोड़ा घोषित करने में हुई। ब्रिटेन के नियम-कानूनों के तहत माल्या का प्रत्यर्पण कब तक हो पायेगा, यह तो समय ही बतायेगा, लेकिन इस पूरे प्रकरण से जुड़े सवाल दरअसल हमारी व्यवस्था के लिए सबक भी हैं। अब तो यह बात गोपनीय नहीं रह गयी कि माल्या ने सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय बैंकों से कर्ज लेने में फर्जीवाड़े का भी सहारा लिया, लेकिन यह मान लेना नादानी होगी कि संबंधित बैंक अधिकारी बिना किसी स्वार्थ-प्रलोभन के ही उसके जाल में फंस गये होंगे। आम ईमानदार करदाता को भी बैंक से कर्ज लेने में पसीने छूट जाते हैं। फिर भला एक संदिग्ध कारोबारी फर्जीवाड़े के बल पर कैसे बैंकों से हजारों करोड़ रुपये का कर्ज लेने में सफल हो गया? उसे कर्ज दिलाने में राजनीतिक सत्ता की भूमिका संबंधी आरोपों को भी आसानी से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह अलग बात है कि कर्ज पूर्ववर्ती संप्रग सरकार के शासन में लिया गया और देश छोड़कर फरार राजग शासन में हुआ। सवाल तो हमारी पूरी राजनीतिक एवं शासन व्यवस्था पर ही लग गया है। माल्या प्रकरण का जरूरी सबक यह भी है कि न सिर्फ उसे लंदन से लाने के लिए हरसंभव प्रयास किये जायें, बल्कि उसे और ललित मोदी जैसे अन्य वांछित अपराधियों को भी उनके अंजाम तक पहुंचा कर ऐसे धोखेबाजों के लिए मिसाल भी पेश की जाये।

राशिफल

मेष : गणेशजी कहते हैं कि आज आप सांसारिक विषय किनारे रखकर आध्यात्मिकता की तरफ मुड़ेंगे। गूढ़ रहस्यमय विद्याओं की तरफ विशेष आकर्षण रहेगा। गहरे चिंतन-मनन आपको अलौकिक अनुभूति कराएंगे। वाणी पर संयम रखने से बहुत-सी गलतफहमियों से बच सकेंगे। अचानक धन लाभ होगा। हित-शत्रुओं से बचकर रहें। कोई भी नया काम आज शुरू न करें।

वृषभ : आज आप गृहस्थ जीवन और दांपत्यजीवन में सुख-शांति का अनुभव करेंगे। पारिवारिक सदस्यों और निकटस्थ दोस्तों के साथ उत्तम भोजन करने का अवसर मिलेगा। छोटे प्रवास का आयोजन भी हो सकता है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। धन लाभ होगा। भागीदारी में लाभ प्राप्ति के योग हैं।

मिथुन : आज आपके अधूरे कार्य पूरे होंगे और यश की प्राप्ति होगी। घर में शांति और आनंद का वातावरण आपके मन को प्रसन्न रखेगा। स्वास्थ्य बना रहेगा। आर्थिक लाभ होगा। ऑफिस में संघर्ष या मनमुटाव के अवसर आ सकते हैं। इससे सावधान रहना आवश्यक है।

कर्क : दिन की शुरुआत चिंता के साथ होगी। साथ-साथ स्वास्थ्य की शिकायत भी रहेगी। नए कार्य शुरू करने के लिए दिन अच्छा नहीं है। आकस्मिक धन खर्च होगा। प्रेमी जोड़ों के बीच वाद-विवाद हो सकता है। यात्रा-प्रवास में कठिनाई आएगी, ऐसा गणेशजी कहते हैं।

सिंह : नकारात्मक विचार हताशा पैदा करेंगे। शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थता अनुभव करेंगे। माता-पिता के साथ मतभेद हो सकता है या फिर उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जमीन, मकान और वाहन के दस्तावेज करने में सावधानी रखें। भावनाओं पर नियंत्रण रखने की गणेश जी सलाह देते हैं।

कन्या : आज जो भी कदम उठाएं, सोच-विचार करके ही उठाएं। हालांकि कार्य में सफलता तो आपको मिलेगी ही। प्रतिस्पर्धी आपसे परास्त होंगे। भाई-बंधुओं और पड़ोसियों के साथ खूब अच्छे सम्बंध रहेंगे। आर्थिक लाभ के भी योग हैं। सार्वजनिक मान-सम्मान मिलेगा। चित्त में प्रसन्नता रहेगी।

तुला : गणेशजी आपको जिद्दी व्यवहार छोड़कर समाधानपूर्ण व्यवहार रखने के लिए कहते हैं। आपकी अनियंत्रित वाणी किसी से मनमुटाव करा सकती है। दुविधा में फंसा मन आपको ठोस फैसला लेने से रोक रहा है। आज कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय न लें।

वृश्चिक : तन-मन से खुश और प्रफुल्लित रहेंगे। कुटुंबीजनों और मित्रों के साथ उत्तम भोजन, प्रवास के योग हैं। जीवनसाथी के साथ गाढ़ी आत्मीयता का अनुभव करेंगे। आर्थिक लाभ के योग हैं। शुभ अवसर पर बाहर जाने के योग हैं।

धनु : गणेशजी के विचार से आज का दिन आपके लिए थोड़ा कष्टदायक रहेगा। स्वास्थ्य खराब होगा। पारिवारिक सदस्यों के साथ नोंकझोंक के कारण मन दुखी होगा। मानसिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। क्रोध पर अंकुश रखना पड़ेगा। दुर्घटना से बचें। कोर्ट-कचहरी के मामले में सावधानी रखें। अधिक खर्च होने से पैसे की तंगी हो सकती है।

मकर : सामाजिक क्षेत्र में, नौकरी-धंधे में और अन्य क्षेत्रों में आज का दिन लाभदायक रहेगा। मित्रों, सगे-सम्बंधियों के साथ बाहर जाएंगे। मांगलिक प्रसंगों में उपस्थित होंगे। विवाहोत्सुक युवक-युवतियों की वैवाहिक समस्या हल होगी। प्रवास-पर्यटन के भी योग हैं।

कुंभ : गणेशजी की कृपा से आपका हर काम बिना किसी परेशानी के पूरा हो जाएगा। नौकरी-व्यवसाय की जगह परिस्थिति अनुकूल रहेगी और कार्य में सफलता मिलेगी। बुजुर्गों और उच्च पदाधिकारियों की कृपादृष्टि रहने के कारण आप मानसिक रूप से किसी भी प्रकार के बोझ से मुक्त होंगे। गृहस्थ जीवन में आनंद रहेगा। धन प्राप्ति और पदोन्नति का योग है।

मीन : नकारात्मक विचार आज हावी हो सकते हैं। मानसिक अस्वस्थता आपको परेशान करेगे। स्वास्थ्य के सम्बंध में शिकायत रहेगी। नौकरी में उच्च अधिकारियों के साथ सावधानीपूर्वक कार्य करें। संतानों की समस्याएँ आपको चिंतित करेंगे। प्रतिस्पर्धी अपनी चाल में सफल होंगे। आज महत्त्वपूर्ण निर्णय न लेने की गणेशजी की सलाह है।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य - 31

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :
1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गौरैया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संस्था 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे
1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

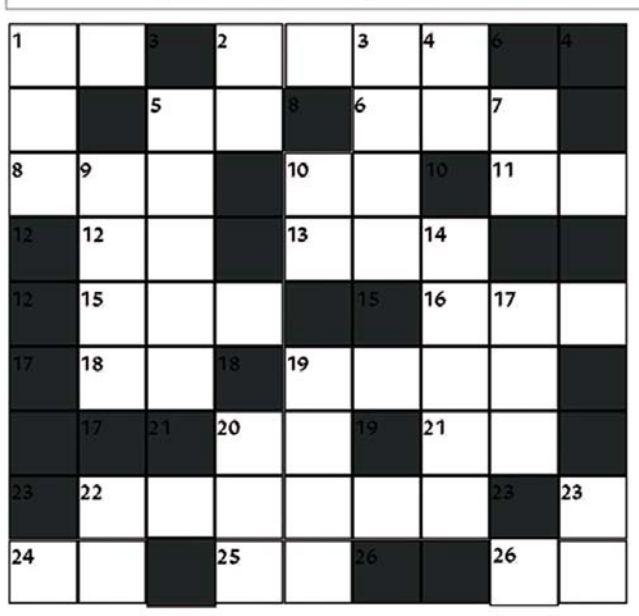

पिछले अंक का हल

स्वा	द	2	सा	म	ना	3	कै	दी
व	■	ख	ल	ना	य	क	■	वा
लं	प	ट	8	ना	क	क	ट	ना
बी	10	प	■	■	11	ड़ी	13	प
14	अ	ट	प	टा	■	■	शा	न
स	ह	■	यो	■	20	र	ति	■
ह	म	■	द	र	ब	द	र	24
म	क	र	■	सी	ल	■	26	21
त	■	क्षा	■	द	वा	खा	ना	■

सू-दोकू

सू- दोकू क्र. 31

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3		2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7